**''और तक़्वे का पहनावा ही अच्छा भला है।''**

(सूर–ए–आराफ़)

# घर और समाज में ख़ुदा का डर (तक़्वा)

**(पिछले शुमारे से आगे)**

**हुज्जतुल इस्लाम प्रो0 हुसैन अन्सारियान**
**अनुवादक : मु0 र0 आबिद**

## तक़्वे वाले मियाँ–बीवी

तक़्वा रखने वाला, संयमी मर्द घर के ख़र्चे हलाल कमाई से पूरे करता है। हलाल माल छोड़ दूसरी चीज़ क़बूल नहीं करता। वह सभी लोगों के हक़ का ख़याल रखते हुए ख़ुदा का हलाल किया हुआ ही कमाता है। यानी वह ख़ुदा के बन्दों को नुक़सान नहीं पहुँचाता है,वह तक़्वे की ख़ातिर हराम की ओर नहीं देखता है और मन की पाकी और कम ख़र्ची से ख़ुशी के ख़ज़ाने को बर्बाद नहीं करता है।

तक़्वे वाले लोग जब काम से फ़ुरसत पाकर घर लौटकर आते हैं तो वे दिन भर की थकान को दरवाज़े के बाहर ही छोड़ देते हैं और ख़ुशी–ख़ुशी घर में जाते हैं, बीवी से मुसकुरा कर बातचीत करते हैं, बीवी जो दिनभर घर की सफ़ाई सुथराई, खाना–पकाने और बच्चों की देखभाल में तकलीफ़ उठाती है उसकी क़द्र करते हैं, उससे और बच्चों से प्यार के साथ मिलते हैं और हरेक की उसके लिहाज़ से इज़्ज़त, सम्मान करते हैं।

तक़्वे वाले लोग सूझबूझ रखने वालों के सामने हलाल–हराम, अच्छे–बुरे और अच्छाई–बुराई को बताते हैं और उन्हें दीन से और दीन वाला बनने से लापरवाह नहीं होने देते। तक़्वे वाले लोग अपनी उम्र के किसी पल को बेकार नहीं जाने देते, वे सिर्फ अपने दोस्तों ही के लिए ख़ुशी नही दिखाते और न ही मस्जिदों और मज़हबी प्रोग्रामों में शरीक होने में ज़्यादती करते हैं।

तक़्वे वाले इस बात पर नज़र रखते हैं कि इस्लाम हर चीज़ यहाँ तक इबादत में भी बीच के रास्ते का हुक्म देता है और बीवी बच्चों को छोड़कर दोस्त के पास ज़्यादा आने जाने और प्रोग्रामों में ज़्यादा शरीक होने से मना करता है।

तक़्वे वाला आदमी हर हाल में ज़िन्दगी के हर काम में ज़रूरी आदाब (संस्कार) का लिहाज़ करता है। इस तरह वह घर–घराने की नींव मज़बूत और बीवी बच्चों से प्यार पा लेता है। तक़्वा वाली औरत अपनी इज़्ज़त और पाकी को बचाए रखती है, घर के काम दिल लगाकर और शौक़ से करती है, अपने पति की थकान दूर करने और ख़ुश करने के जतन करती है, अपने बच्चों की अच्छे से अच्छे तरीक़े से देखभाल करती है, पति और बच्चों के साथ इस्लामी चलन से बर्ताव करती है, अपनी इबादत से लापरवाही नहीं बरतती और अपने घर को प्यार मुहब्बत, मेहरबानी और वफ़ा का केन्द्र बना देती है।

तक़्वे वाली औरत ख़ुदा के बनाये हुए उसूलों के मुताबिक़ अपने पति का कहना मानती है, उसके सही जायज़ हक़ और माँगो–चाहतों

को पूरा करती है और गुस्से, घमण्ड को पास फटकने नहीं देती। सुसराल वालों से इस्लामी संस्कार और प्यार–नर्मी, मेहरबानी से मिलती है और जब पति काम से वापस आता है तो उसे लेने दरवाज़े तक जाती है और जब पति जाता है तो पहुँचाने जाती है और उससे प्यार से कहती है कि सिर्फ़ हलाल कमाई घर लाना, मैं ख़ुदा के हलाल किये हुए पर चाहे कम ही क्यों ने हो राज़ी ख़ुशी रहूँगी और हराम को न लूँगी। ख़ुदा के दिये हुए भाग्य, मुक़द्दर को इस तरह रौंद न देना कि, मेरे यहाँ बीवी बच्चे हैं, ख़र्च ज़्यादा है (और हराम कमाओ)

तक़वे वाली औरत लालच से बचती रहती है, अपने पति को अपने घर या पति के ख़ानदान वालों के रंग में रंग जाने पर मजबूर नहीं करती है और उसकी आखें नीची नहीं करती।

ऐसे ही मियाँ–बीवी ख़ुदा के चहीते, ने किसी के साते और इन दोनें के साये तले ख़ुदा की पसन्द का घर बन जाता है और इस घर के माहौल में सच, (ख़ुदा) चाहने वाले (यथार्थी) बच्चे पलते हैं। बहर हाल मियाँ बीवी को चाहिए कि वे अल्लाह वालों की तरह ज़िन्दगी के मामलों में ख़ुदाई समझ, इस्लामी क़ाएदे और शरीअत के क़ानून का लिहाज़ रखें।

## मिसाली कमाने वाले

मेरे बाप मेरी माँ से कहते थे कि जब तक शहर से दूसरे शहर का सफ़र चौपायों से (घोड़ ख़च्चर वग़ैरा से) किया जाता था उस ज़माने में हम अपने दोस्तों के साथ ख़ाँनसार के इलाक़े से इस्फ़हान के रास्ते इमामे रिज़ा के रौज़े की ज़ियारत के लिए रवाना हुए। मेरे ज़िम्मे दोस्तों की ज़रूरत की चीज़ें ख़रीदना था। दामग़ान शहर में सुब्ह के समय मैं एक दुकान पर पहुँचा। एक चीज़ की ज़रूरत थी। दुकानदार ने मुझे अन्दर बुला लिया। ज़ायर (ज़ियारत करने वाला) समझ कर बहुत ख़ातिर की। एक और ग्राहक आ गया जो बहुत सी चीज़ें खरीदना चाहता था। दुकानदार ने कहा मेहरबानी करके ये चीज़ें सामने वाली दुकान से ले लीजिये। ग्राहक चला गया। मैंने कहा ये चीज़ें तुम्हारे पास बहुतात में मौजूद हैं क्यों न बेची। वह कहने लगा कि सुब्ह मैंने उस दुकानदार का चेहरा उतरा हुआ देखा था। मैंने वजह मालूम की। कहा मुझ पर क़र्ज़ है और आज क़र्ज़ चुकाने का दिन है लेकिन कल से अभी तक इतनी बिक्री नही हुयी कि जिससे क़र्ज़ अदा हो सके। उसके हाल पर मुझे रहम आया। इसलिए मैंने अपने ग्राहक उसकी दुकान पर भेज दिये ताकि उसे इस दुख से नजात मिल जाए। क्योंकि मोमिन को अपने मोमिन भाई का ख़याल रखना चाहिए। हाँ हम सबको एक–दूसरे का ख़याल रखना चाहिए। ख़ासकर पति को अपनी बीवी का, बीवी को अपने मियाँ का लिहाज़ रखना चाहिए ताकि घर की बुनियाद ख़ुदाई और इस्लामी संस्कार (आदाब) पर खड़ी हो जाए और नतीजे में उस घर के बच्चे शरीफ़ और समझदार हो जाएँ।

मेरे प्यारे भाईयों! अपने घर को ख़ासकर सुब्ह के समय कुर्आन मजीद की तिलावत (पाठ) की खुश्बू, (सेण्ट) से बसायें ताकि इस पाक कुर्आन की तिलावत के वक़्त आपकी रूहानी आवाज़ आपके बीवी बच्चों के कानों में पड़े और कानों के रास्ते दिल तक पहुँच जाए, उन्हें इबादत और तिलावत की तरफ़ रुजहान दिलाए और उनमें कुछ को नेकी, तक़वा, बड़ाई और शराफ़त का सोता बना दे।

**(जारी)**